क्या मुश्किल इस जीने में?

संदीप पांडे 'शिष्य'
अजमेर

रोना – धोना, चीख – पुकार
सर पर दुख का ले अंबार
छोटा सा यह जीवन अपना
क्या रक्खा है खोने मे?

उसका बंगला खूब बडा है
कारें चमचम करती हैं ।
साईकिल पर पैडल की ताकत
क्या कम अपने सीने मे ?

दौलत शोहरत, शान ओ शौकत
नौकर चाकर, दसियो व्यंजन
दो रोटी भूख की खातिर
क्यों घर भरता कोने मे?

यह भी ले लूँ, वो भी पा लूँ
घर अपना गोदाम बना लूँ
कर बस अपने सुख की चाहत
क्यो दुःख भर दूं औरो में?

धरती यह हर जीव की माता

सबकी वो है पालनहारा
सबकी खुशी बसे मन में तो
क्यों हो मुश्किल जीने में?
"इति"